

भारत-रूस सैन्य संबंध

प्रलम्बिस के लयि:

रूस-यूक्रेन संघर्ष, ऑपरेशन गंगा, भारत द्वारा रूस से खरीदे गए वभिन्न रक्षा उपकरण, प्रोजेक्ट 75-I

मेन्स के लयि:

रक्षा प्रौद्योगिकी, द्वपिक्षीय समूह एवं समझौते, रूस के साथ भारत के रणनीतिक संबंध, रूस-यूक्रेन संघर्ष

चर्चा में क्यों?

यूक्रेन में हज़ारों भारतीय छात्रों की नक़ासी का अभयान (ऑपरेशन गंगा) भारत पर यूक्रेन-रूस युद्ध का सबसे तात्कालिक प्रभाव है। हालाँकि रूस-यूक्रेन संघर्ष के दीर्घकालिक नहितार्थ अभी सामने आने शेष हैं।

- उदाहरण के लयि एक तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों को बनाए रखना और दूसरी तरफ रूस के साथ ऐतहिसासिक रूप से गहरे एवं रणनीतिक संबंधों को बनाए रखना।
- इसका भारत और रूस के बीच दशकों पुराने रक्षा वय़ापार पर सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।



भारत-रूस रक्षा संबंधों का इतहिस:

- भारत स्वतंत्रता के तुरंत बाद अपने हथियारों के आयात के लयि लगभग पूरी तरह से ब्रिटिश और अन्य पश्चिमी देशों पर नरिभर था।
- हालाँकि समय के साथ यह नरिभरता कम हो गई और 1970 के दशक के बाद से भारत USSR (अब रूस) से कई हथियार प्रणालयों का आयात कर रहा था, जसिसे यह दशकों तक देश का सबसे बड़ा रक्षा आयातक बन गया।
- रूस ने भारत को कुछ सबसे संवेदनशील और महत्त्वपूर्ण हथियार प्रदान कयि हैं, जनिकी भारत को समय-समय पर आवश्यकता पड़ती रहती है, इसमें परमाणु पनडुब्बी, वमिन वाहक, टैंक, बंदूकें, लड़ाकू जेट और मसिाइल शामिल हैं।
 - एक अनुमान के अनुसार, भारतीय सशस्त्र बलों में रूसी मूल के हथियारों और प्लेटफॉर्मों की हसिसेदारी 85% तक है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद रूस दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार नरियातक है।
- हथियारों के हस्तांतरण के मामले में रूस के लयि भारत सबसे बड़ा आयातक है।

- वर्ष 2000 और वर्ष 2020 के बीच रूस, भारत को हथियारों के आयात के 66.5% हस्तिसे के लिये उत्तरदायी था।
- वर्ष 2016 और वर्ष 2020 के बीच भारत को हथियारों के आयात में रूस की हस्तिसेदारी लगभग 50% तक कम हो गई थी, लेकिन यह अभी भी सबसे बड़ा एकल आयातक बना हुआ है।

भारत, रूस से कौन-से रक्षा उपकरण खरीदता है?

- **पनडुबबयिँ:** भारत को अपनी पहली पनडुबबी भी सोवियत संघ से ही प्राप्त हुई थी।
 - USSR से खरीदी गई पहली फॉक्सट्रॉट क्लास पनडुबबी ने वर्ष 1967 में आईएनएस कलवरी के रूप में भारतीय सेना में प्रवेश किया था।
 - भारतीय नौसेना के पास कुल **16 पारंपरिक डीज़ल-इलेक्ट्रिक पनडुबबयिँ** में से आठ सोवियत मूल की कलिव श्रेणी की हैं।
 - भारत के पास चार में से एक स्वदेश निर्मित परमाणु बैलस्टिक पनडुबबी (**आईएनएस अरहित**) है, हालाँकि जिनहें विकसित किया जा रहा है उनमें से कई रूसी तकनीकी पर आधारित हैं।
- **फ्रिगट और गाइडेड-मिसाइल डिस्ट्रॉयर:** नौसेना के 10 गाइडेड-मिसाइल वधिवंसक में से चार रूसी काशीन श्रेणी के हैं और इसके 17 युद्धपोतों में से छह **रूसी तलवार श्रेणी** के हैं।
- **वमिन वाहक:** भारत की सेवा में एकमात्र वमिन वाहक **आईएनएस वकिरमादित्य एक सोवियत निर्मित कीव-श्रेणी का पोत** है जो वर्ष 2013 में भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था।
- **मिसाइल कार्यक्रम:** भारत का महत्त्वपूर्ण मिसाइल कार्यक्रम रूस या सोवियत संघ की मदद से विकसित किया गया था।
 - भारत जल्द ही जसि **ब्रह्मोस मिसाइल** का नरियात शुरू करेगा, उसे रूस के साथ संयुक्त रूप से विकसित किया गया है।
- **लड़ाकू वमिन:** भारतीय वायुसेना का 667-वमिन फाइटर ग्राउंड अटैक (FGA) बेड़ा 71% रूसी मूल (39% Su-30s **(सुखोई)**, 22% MiG-21s, 9% MiG-29s) का है। सेवा में शामिल सभी छह एयर टैंकर **रूस निर्मित IL-78s** हैं।
- **हथियार और गोला-बारूद: इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटेजिक स्टडीज़ (IISS) के अनुसार,** भारत का वर्तमान सैन्य शस्त्रागार रूस द्वारा निर्मित या डिज़ाइन किये गए उपकरणों से भरा हुआ है।
- **भारतीय सेना का मुख्य युद्धक टैंक** मुख्य रूप से रूसी T-72M1 (66%) और T-90S (30%) से बना है।
- **भारत के लिये अनुकूल रूसी सैन्य नरियात:** भारत में रूस का अधिकांश प्रभाव हथियार प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों को प्रदान करने की उसकी समर्थाके कारण है जसि कोई अन्य देश भारत को नरियात नहीं करेगा।
 - अमेरिका केवल गैर-घातक रक्षा तकनीक प्रदान करता है जैसे **सी-130जे सुपर हरक्यूलसि, सी-13 ग्लोबमास्टर, पी-8आई पोसीडॉन** आदि।
 - जबकि रूस **ब्रह्मोस सुपरसोनिक मिसाइल, एस-400 एंटी-मिसाइल सिस्टम** जैसी उच्च तकनीक मुहैया कराता है।
 - रूस भी अपेक्षाकृत आकर्षक दरों पर उन्नत हथियारों की पेशकश जारी रखता है।

सैन्य आपूर्ति पर रूस-यूक्रेन युद्ध का प्रभाव

- फलिहाल भारत और रूस के बीच दो बड़े रक्षा सौदे हैं जनि पर मौजूदा संकट का प्रभाव पड़ सकता है।
- **S-400 ट्रायम्फ एयर-डिफेंस सिस्टम डील:**
 - यह सौदा अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण खतरे में है, यहाँ तक कि अमेरिका ने अभी तक इस पर फैसला नहीं लिया है।
 - हालाँकि रूस पर नए दौर के प्रतिबंध इस सौदे को खतरे में डाल सकते हैं।
- **संयुक्त पनडुबबी के विकास की योजना:** रूस चार अन्य अंतरराष्ट्रीय बोलीदाताओं के साथ **प्रोजेक्ट-75-I** के तहत नौसेना हेतु छह एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (AIP- संचालित) पारंपरिक पनडुबबयिँ को बनाने के लिये भी प्रयासरत है।
 - भारत दो परमाणु-बैलस्टिक पनडुबबयिँ- चक्र 3 (**Chakra 3**) और चक्र 4 (**Chakra 4**) को पट्टे पर देने हेतु रूस के साथ बातचीत कर रहा है, जनिमें से पहली पनडुबबी की आपूर्ति वर्ष 2025 तक होने की उम्मीद है।

हथियारों के आयात में विविधता लाने के लिये भारत की योजनाएँ:

- भारत द्वारा पछिले कुछ वर्षों में न केवल अन्य देशों में बल्कि घरेलू स्तर पर भी अपने हथियार प्लेटफॉर्म बेस का वसितार करने के लिये प्रयास किया गया है।
- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) ने पछिले वर्ष अपनी अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण प्रवृत्ति रिपोर्ट में उल्लेख किया था कि भारत द्वारा वर्ष 2011-15 और वर्ष 2016-20 के बीच हथियारों के आयात में 33% की कमी आई है।
- वर्ष 2011-15 तक संयुक्त राज्य अमेरिका भारत का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता देश था, लेकिन वर्ष 2016-20 के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका से भारत को किये गए हथियारों का आयात पछिले पाँच साल की अवधि की तुलना में 46% कम था जसिसे वर्ष 2016-20 में यूएसए भारत का चौथा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता देश बन गया।
- वर्ष 2016-20 तक फ्रांस और इज़रायल भारत के लिये दूसरे और तीसरे सबसे बड़े हथियार आपूर्तिकर्ता देश थे।

आगे की राह

- जैसा कि पाकिस्तान और चीन को भारत बढ़ते खतरे के रूप में देखता है, साथ ही भारत की स्वयं की प्रमुख हथियारों का उत्पादन करने की महत्वाकांक्षी योजनाएँ हैं, इसलिये भारत हथियारों के आयात को कम करने हेतु बड़े पैमाने पर कार्यक्रमों की योजना बना रहा है।
- आने वाले पाँच वर्षों में लड़ाकू वमिनो, वायु रक्षा प्रणालियों, जहाज़ों और पनडुबबयिँ की उत्कृष्ट डिलीवरी के कारण भारत के हथियारों के नरियात में वृद्धि होने की उम्मीद है।

- इसलिये भारत के लिये यह महत्त्वपूर्ण है कि वह अपने आधार में वविधिता लाए, कसी एक राष्ट्र पर बहुत अधिक निर्भर न हो, क्योंकि यह एक ऐसा लेवरजि (Leverage) निर्मित कर सकता है जिसका हथियार आयातक देश द्वारा भारत का शोषण किया जा सकता है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/india-russia-military-relations>

